श्री भंवर सिंह भाटी

माननीय उच्च शिक्षा मंत्री

उद्‌बोधन

27 वाँ दीक्षान्त समारोह

21 दिसम्बर, 2019

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

माननीय महामहिम राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय श्रीमान् कलराज मिश्र जी, विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, विश्वविद्यालय के विद्वान् शिक्षकवृंद, आज उपाधि ग्रहण करने वाले दीक्षित विद्यार्थी एवं उनके अभिभावकगण तथा उपस्थित विद्यानुरागी नागरिकवृंद, मीडियाकर्मी तथा मित्रो !

राजस्थान की शौर्य भूमि, शक्ति और भक्ति से अनुप्राणित पुण्य-भूमि मेवाड़ की धन्यधरा पर प्रदेश के दक्षिणी क्षेत्र में शिक्षा के विकास के लिए संकल्पित इस विश्वविद्यालय में आकर मैं गौरवान्वित हूँ। मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय के 27वें दीक्षान्त समारोह में माननीय कुलाधिपति एवं राज्यपाल महोदय के सान्निध्य में आयोजित इस गरिमापूर्ण आयोजन का मैं साक्षी बना।

मेवाड़ की यह धरती भारतीय ऐतिहासिक स्वाभिमान का प्रतीक है। जब कभी भी अपने गौरवपूर्ण इतिहास का स्मरण कर अपने पूर्वजों के त्याग और बलिदान के समक्ष वर्तमान और भावी पीढ़ियाँ नतमस्तक होंगी तब सर्वप्रथम मेवाड़ का ही स्मरण होगा। न केवल शूरता, वीरता, स्वाभिमान के लिए अपितु सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए मेवाड़ की भूमि का सदैव यशोगान होगा। चित्तौड़गढ़ के अजेय दुर्ग में खड़ा कीर्ति स्तंभ भारतीय इतिहास में मेवाड़ की उज्ज्वल कीर्ति का युगयुगांतर तक गुणगान करेगा। मीरां का कृष्ण प्रेम और अनन्य भक्ति आराध्य-आराधक, भगवान और भक्त के बीच सर्वोच्च भाव-संबंध को स्थापित करने वाली है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर और विरासत के संरक्षण की शिक्षा भी इस विश्वविद्यालय में प्राप्त करें।

राज्य सरकार उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए हरसंभव प्रयत्न कर रही है। शैक्षणिक संस्थानों की पहुँच आज राज्य के कोने-कोने में उपखण्ड स्तर और दूरदराज तक हो चुकी है। मेरा मंत्रालय विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों के विकास और विस्तार की योजनाओं और कार्यक्रमों को निरन्तर प्रोत्साहित कर रहा है। सरकार के स्तर पर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मजबूती के साथ नीतिगत निर्णय किए जा रहे हैं। नए महाविद्यालय खोलने, उनके संरचनागत स्वरूप का विकास करने तथा उनमें शिक्षकों को नियुक्त करने की दिशा में हमने तेजी से पहल की है। प्रदेश में उच्च शिक्षा जगत में विद्यार्थियों के सकल नामांकन में आशा के अनुरूप बढ़ोतरी हुई है। विशेष रूप से बालिकाओं का उच्च शिक्षा में रूझान और उपलब्धियाँ देखकर हमें संतोष है। हमारे प्रयास हैं कि अधिक से अधिक बच्चों को विद्यालयी शिक्षा पूरी करने के बाद उच्च शिक्षा

का अवसर प्राप्त हो। हम साधनों के अभाव की पूर्ति के लिए कृतसंकल्प हैं। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उच्च शैक्षणिक संस्थाओं को मजबूती प्रदान की जा रही है। प्रदेश की यह आकांक्षा भी है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मात्रात्मक सुधार के साथ-साथ गुणात्मक रूप से भी उसमें वृद्धि होनी चाहिए।

सूचना-प्रौद्योगिकी का उच्च शिक्षा में अनुप्रयोग विकास के लिए एक क्रांतिकारी कदम सिद्ध हो रहा है। ई-लर्निंग की दिशा में हमारी संस्थाएँ नवाचार कर रही हैं। सूचना-तकनीक के द्वारा गाँव-ढाणी का दूरस्थ विद्यार्थी भी विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ विद्वानों के ज्ञान का घर बैठे लाभ प्राप्त कर सकता है। ज्ञान का विकास ही ज्ञान का संरक्षण होता है। बदलते हुए परिप्रेक्ष्य और चुनौतियों के संदर्भ में हमारे ज्ञान की परीक्षा होती है और प्रासंगिकता प्रमाणित होती है। प्रश्न खड़े करना शिक्षा की मौजूदगी का प्रमाण होता है और उनके समाधान खोजना उस शिक्षा की परिणति या प्रतिफल होता है। हमारे विश्वविद्यालय इस प्रकार के शैक्षणिक संवादों को प्रोत्साहित करें जिनके द्वारा दूरदर्शितापूर्ण ज्ञान के विशिष्ट आयामों का प्रकाशन हो जो विद्यार्थियों की भावी पीढ़ी को उस विषय में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान करे।

जब कोई व्यक्ति किसी संस्कार के लिए अपने आपको समर्पित करता है तो वह समर्पण दीक्षा कहलाता है। भारतीय चेतना में मानवीय जीवन के संस्कारों का महत्त्व सर्वविदित है। दोषों को दूर करना और गुणों को धारण करना संस्कार शब्द का अर्थ है। संस्कार-सम्पन्न होने पर ही जीवन मूल्यवान बनता है। दीक्षान्त में अन्त शब्द चरम सीमा का बोध कराता है। दीक्षान्त विधि के अवसर पर अधीत ज्ञान और कौशल के साथ-साथ चारित्रिक शुचिता के माध्यम से सामाजिक समरसता और मानवमात्र के कल्याण के लिए समर्पण का लक्ष्य उपस्थित रहता है।

दीक्षान्त समारोह विद्यार्थियों, उनके शिक्षकों तथा शैक्षणिक नीति-निर्माताओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण अवसर होता है जिसमें वर्तमान और भावी शैक्षणिक मूल्यों से संबंधित चिंतन और विचार जानने का मौका मिलता है। यह विद्यार्थियों के लिए संधिकाल है जिसमें उनके पढ़े हुए ज्ञान और असल जीवन में उसके उपयोग के समन्वय का आरंभ होता है।

शिक्षा में मूल्यों की चेतना होना परम आवश्यक है। मूल्य सापेक्ष शिक्षा के द्वारा ही शिक्षा के समग्र उद्देश्य प्राप्त किए जा सकते हैं। विद्यार्थियों में जिज्ञासाएँ उनके समाधान खोजने की चेष्टा, सतत परिश्रम, स्वास्थ्य संचेतना, वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण, निर्भीकता, साहस, सत्यनिष्ठा, सहयोग की भावना, लक्ष्य के प्रति समर्पण आदि मूल्यों

का विकास होना चाहिए। मस्तिष्क में विषय से संबंधित केवल सूचनाओं की स्मृति और भंडारण मनुष्य को उपकरण के रूप में विकसित करते हैं जबकि मूल्यपरक शिक्षा मनुष्य में कर्तृत्व और स्वाधीनता का संस्कार विकसित करती है। संस्कारित विद्यार्थी विषयगत कौशल के साथ-साथ मानवीय सद्गुणों तथा मूल संवेदनाओं की अनुभूति करने वाला नागरिक बनता है। संकुचित स्वार्थ और संकीर्ण दायरों को पार करते हुए वह सार्वभौमिक मानवता के कल्याण के लिए स्वयं को प्रस्तुत करता है। अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से अनुकरणीय आदर्श रचता है। यही बुनियादी आवश्यकता है।

इस अवसर पर मैं शिक्षकों से भी यह उम्मीद करता हूँ कि वे अपने ज्ञान और कर्म से विद्यार्थियों के सामने अनुकरणीय आदर्श बनें। अनुशासन, निरन्तर स्वाध्याय और प्रवचन अर्थात् अध्ययन-अध्यापन, अनुसंधान और विस्तार ही शिक्षक को शिक्षक बनाते हैं। अपने विद्यार्थियों के भीतर विषय में रुचि और जिज्ञासा का जागरण करते हुए उन्हें स्वतंत्र वैचारिक प्रक्रिया की ओर आगे बढ़ाने का कार्य शिक्षक का है। विचारों के भार को स्थानान्तरित कर देना मात्र ही शिक्षक का कर्त्तव्य नहीं है अपितु विचार की प्रक्रिया को प्रादुर्भूत और प्रोत्साहित करना आकाशधर्मी शिक्षक का चरित्र होता है। समाज के विभिन्न तबकों से आने वाले सभी विद्यार्थियों को आत्मार्पित करके उन्हें संस्कारित कर उनके व्यक्तित्व का निर्माण शिक्षक ही कर सकता है इसीलिए भारतीय परम्परा गुरु को ईश्वर के समान मानती है। माता-पिता केवल भौतिक शरीर का निर्माण करते हैं जबकि शिक्षक व्यक्तित्व अथवा ज्ञान-शरीर का निर्माण करते हैं।

शिक्षक और विद्यार्थी देश, समाज और संस्कृति का निर्माण करते हैं। जिस प्रकार धरती और आकाश के बीच वर्षा, माता और पिता के बीच संतान की संधि होती है, उसी प्रकार शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विद्या की संधि होती है। मैं कामना करता हूँ कि विश्वविद्यालय के अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच यह विद्या की संधि और मजबूत बने तथा हमारे समाज और देश को इसका लाभ प्राप्त हो। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं आज पदक और उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ और उनके सफल तथा सार्थक भविष्य की कामना करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि वे अपने रचनात्मक योगदान से अपने परिवार, समाज, प्रदेश, देश और वैश्विक मानवता की उन्नति के लिए संकल्पित होंगे तथा अपनी मातृ-संस्था मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की प्राप्त उपाधि के योग्य स्वयं को सदैव प्रमाणित करेंगे।

एक बार पुनः सभी को बधाई।

जय हिन्द। जय भारत।।